NEWS 18
हिंदी

https://hindi.news18.com/news/haryana/gurgaon-why-is-it-necessary-to-check-stainless-steel-use-in-construction-before-buying-a-house-ws-l-10513154.html

घर खरीद रहे हैं तो जांच लें एक चीज, मजबूती पर नहीं आएगी आंच, सरकार ने भी कर दी जरूरी

Written by: प्रिया गौतम | Agency: News18Hindi
Last Updated: May 26, 2026, 16:09 IST

सरकार ने समुद्र तटीय निर्माण में स्टेनलेस स्टील सरिये के इस्तेमाल को अनिवार्य कर दिया है. ऐसे में अगर आप भी घर खरीदने जा रहे हैं तो सबसे पहले यह देखें कि निर्माण कार्य में एसएस की सरिया का इस्तेमाल हो रहा है या नहीं.

घर खरीदने से पहले जांच लें ये एक चीज, घर की मजबूती के आएगी काम.

भारत का रियल एस्टेट सेक्टर लगातार तेजी से आगे बढ़ रहा है. लोगों की बढ़ती जरूरतों और बेहतर जीवनशैली की चाह के कारण अब महंगे घरों और आधुनिक ऑफिस स्पेस की मांग भी बढ़ रही है. जेएलएल (JLL) की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, 1 करोड़ रुपये और उससे अधिक कीमत वाले अपार्टमेंट अब कुल आवासीय बिक्री का 62 प्रतिशत हिस्सा बन चुके हैं, जो पिछले साल 51 प्रतिशत था. वहीं, साल 2025 में ग्रेड-ए ऑफिस स्पेस की लीजिंग भी रिकॉर्ड 83.3 मिलियन वर्ग फुट तक पहुंच गई.

अगर आप भी घर खरीदने जा रहे हैं तो एक चीज की जांच जरूर कर लें. ताकि भविष्य में आप किसी कमजोर घर के मालिक न बनें और मजबूती की गारंटी रहे. यह है घरों के निर्माण में स्टेनलेस स्टील. हालांकि आजकल लोग सिर्फ इमारतों के डिजाइन और लुक को ही नहीं, बल्कि उनकी मजबूती और लंबे समय तक टिकाऊ रहने की क्षमता को भी महत्व दे रहे हैं. यही वजह है कि अब निर्माण में इस्तेमाल होने वाली सामग्री पर खास ध्यान दिया जा रहा है, क्योंकि किसी भी भवन की असली गुणवत्ता उसकी मजबूत नींव और बेहतर मटेरियल पर ही निर्भर करती है, फिर भी लोगों को भी सतर्क होने की जरूरत है.

आज लोग ऐसे घर और बिल्डिंग्स पसंद कर रहे हैं जो लंबे समय तक मजबूत रहें, अच्छी क्वालिटी की हों और जिनकी देखभाल पर ज्यादा खर्च न आए. इसी वजह से अब किसी भी प्रोजेक्ट में इस्तेमाल होने वाले मटेरियल पर खास ध्यान दिया जा रहा है. स्टेनलेस स्टील इन प्रोडक्ट में सबसे जरूरी चीज बन गया है. पहले इसका इस्तेमाल केवल सजावट या सीमित कामों में होता था, लेकिन अब सरकार ने भी खासतौर पर समुद्र तटीय इलाकों के लिए एसएस के इस्तेमाल को अनिवार्य कर दिया है. वहीं सामान्य जगहों पर भी भवन निर्माण में एसएस के इस्तेमाल का सुझाव दिया है.

2024 में आया ये बदलाव

साल 2024 में निर्माण क्षेत्र से जुड़े नियमों में एक बड़ा बदलाव किया गया. सरकार ने समुद्र तट के पास होने वाले निर्माण कार्यों में स्टेनलेस स्टील सरिये के इस्तेमाल को जरूरी बना दिया. इसकी वजह यह है कि सामान्य स्टील खारे और नमी वाले वातावरण में जल्दी खराब हो जाता है, जिससे इमारतों की मजबूती कम होती है और रखरखाव पर ज्यादा खर्च आता है. वहीं, स्टेनलेस स्टील ज्यादा टिकाऊ होता है और लंबे समय तक इमारत को मजबूत बनाए रखने में मदद करता है. इसी कारण अब यह सिर्फ एक महंगा विकल्प नहीं, बल्कि सुरक्षित और लंबे समय तक टिकने वाले निर्माण के लिए जरूरी सामग्री बनता जा रहा है.

इंडियन स्टेनलेस स्टील डेवलपमेंट एसोसिएशन (ISSDA) के प्रेसिडेंट राजामणि कृष्णमूर्ति इस बदलाव पर जोर देते हुए कहते हैं, "भारत का रियल एस्टेट सेक्टर अब ऐसे दौर में पहुंच रहा है, जहां किसी प्रॉपर्टी की कीमत सिर्फ उसके आकार और डिजाइन से नहीं, बल्कि उसकी मजबूती, लंबे समय तक टिकाऊ रहने की क्षमता और सस्टेनेबिलिटी से भी तय होगी. अब निर्माण सामग्री का चयन केवल तकनीकी जरूरत नहीं रह गया है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक निर्णय बन चुका है. स्टेनलेस स्टील अपनी जंग-रोधी क्षमता, मजबूती, रिसाइक्लिंग की सुविधा और कम रखरखाव लागत के कारण भविष्य के इंफ्रास्ट्रक्चर और रियल एस्टेट विकास में अहम भूमिका निभा रहा है. साथ ही, बदलते सरकारी नियमों और बढ़ती ईएसजी अपेक्षाओं के बीच, यह भारत में मजबूत, सस्टेनेबल और कम रखरखाव वाले शहरी इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा."

ईएसजी अब कोई विकल्प नहीं, बल्कि एक जरूरत

सरकारी नियमों के साथ-साथ भारत में ESG यानी पर्यावरण, सामाजिक और बेहतर गवर्नेंस से जुड़े मानकों पर भी अब ज्यादा जोर दिया जा रहा है. सेबी के 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्टिंग' (BRSR) फ्रेमवर्क के तहत लिस्टेड डेवलपर्स के लिए सस्टेनेबिलिटी अब केवल एक अच्छी पहल नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी बन गई है. अब कंपनियों को यह दिखाना और रिपोर्ट करना जरूरी हो गया है कि उनके प्रोजेक्ट पर्यावरण और सस्टेनेबल डेवलपमेंट के मानकों पर कितने खरे उतरते हैं. ऐसे में निर्माण में इस्तेमाल होने वाले मटेरियल का चुनाव भी किसी प्रोजेक्ट के ESG प्रदर्शन को सीधे प्रभावित करने लगा है.

व्हाइटलैंड कॉर्पोरेशन के डायरेक्टर स्ट्रेटेजी, सुदीप भट्ट कहते हैं, "ब्रांडेड रेजिडेंसिस सहित प्रीमियम प्रॉपर्टीज के लिए, कंस्ट्रक्शन मटेरियल (निर्माण सामग्री) का चुनाव एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण बदलाव लाने वाला कारक (डिफरेंशिएटर) बन गया है. ईएसजी (ESG) आधारित आर्किटेक्चर पर बनी इमारतें लंबी उम्र सुनिश्चित करती हैं, जो लीड (LEED) और गृह (GRIHA) मानकों को पूरा करने के लिए जरूरी विश्वसनीयता प्रदान करती हैं. विशेष रूप से, स्टेनलेस स्टील रीबार (सरिये) का उपयोग संपत्ति के लाइफसाइकिल को काफी बढ़ा देता है. "

स्टेनलेस स्टील पूरी तरह रिसाइकिल किया जा सकता है और इसकी उम्र सामान्य निर्माण सामग्री की तुलना में कहीं ज्यादा होती है. यही वजह है कि यह कम कार्बन उत्सर्जन और टिकाऊ निर्माण के लिहाज से एक भरोसेमंद विकल्प माना जाता है, जो LEED और GRIHA जैसे ग्रीन बिल्डिंग मानकों को पूरा करने में भी मदद करता है.

बदलते डिजाइन, मगर समाधान वही

भारत में तेजी से बढ़ता डेटा सेंटर सेक्टर इसका सबसे बड़ा उदाहरण बनकर सामने आ रहा है. JLL की H1 2025 डेटा सेंटर रिपोर्ट के अनुसार, इस सेक्टर में साल-दर-साल 48 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, जिसमें मुंबई और चेन्नई देश की कुल क्षमता का 70 प्रतिशत से अधिक हिस्सा रखते हैं.

चूंकि ये दोनों तटीय शहर हैं, इसलिए यहां जंग लगने की समस्या केवल दिखावे तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह इमारतों की मजबूती और संचालन के लिए बड़ा जोखिम बन जाती है. ऐसे मिशन-क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर में, जहां किसी भी तरह का डाउनटाइम स्वीकार नहीं किया जा सकता, वहां स्टेनलेस स्टील एक जरूरी और भरोसेमंद विकल्प बनकर उभर रहा है.

स्टोनक्राफ्ट ग्रुप के फाउंडर और एमडी, कीर्ति चिलुकुरी कहते हैं, "जैसे-जैसे शहरों में आबादी बढ़ रही है और जलवायु परिवर्तन का असर साफ दिखाई देने लगा है, रियल एस्टेट सेक्टर अब केवल तेजी से निर्माण करने पर नहीं, बल्कि दीर्घकालिक मजबूती और मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने पर ध्यान दे रहा है. आज चुनी जाने वाली निर्माण सामग्री किसी भी इमारत की मजबूती, सस्टेनेबिलिटी और रखरखाव को उसके पूरे जीवनकाल तक प्रभावित करती है. भविष्य का रियल एस्टेट विकास प्रकृति के खिलाफ नहीं, बल्कि उसके साथ तालमेल बनाकर आगे बढ़ेगा."